वेयणाअप्पाबहुगाणुयोगद्दारं

वेयणाअप्पाबहुए त्ति ।। १ ।।

सुगमं ।

तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति- पयडिअट्ठदा समयपबद्धट्ठदा खेत्तपच्चासए त्ति ।। २ ।।

एवं तिण्णि चेव एत्थ अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो ।

पयडिअट्ठदाए सव्वत्थोवा गोदस्स कम्मस्स पयडीओ ।। ३ ।।

कुदो ? दोपरिमाणत्तादो[1] ।

वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ तत्तियायो[2] चेव ।। ४ ।।

सादासादभेएण दुब्भावुवलंभादो ।

आउअस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ ।। ५ ।।

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ ।। ६ ।।

केत्तियमेत्तेण ? सगचदुब्भागमेत्तेण ।

मोहणीयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ ।। ७ ।।

को गुणगारो ? बे-पंचभागूणछरूवाणि ।

....

वेदनाअल्पबहुत्वका अधिकार है ।।१।।

यह सूत्र सुगम है ।

उसमें ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं-प्रकृत्यर्थता, समयप्रबद्धार्थता और क्षेत्रप्रत्यास ।।२।।

इस प्रकार यहाँ तीन ही अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि, इनसे अन्य अनुयोगद्वारोंकी यहाँ सम्भावना नहीं है ।

प्रकृत्यर्थताकी अपेक्षा गोत्र कर्मकी प्रकृतियाँ सबसे स्तोक हैं ।। ३ ।।

क्योंकि, वे दो अङ्क प्रमाण हैं ।

वेदनीय कर्मकी भी उतनी ही प्रकृतियाँ हैं ।। ४ ।।

क्योंकि, साता व असाताके भेदसे उनकी भी दो संख्या पायी जाती है ।

आयु कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं ।। ५ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार दो का अङ्क है ।

अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं ।। ६ ।।

कितने मात्रसे वे अधिक हैं ? वे अपने चतुर्थ भाग मात्रसे अधिक हैं ।

मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं ।। ७ ।।

गुणकार क्या है? गुणकार दो बटे पाँच ($\frac{२}{५}$)भागसे कम छह अङ्क है (५ x ५$\frac{३}{५}$ = २८) ।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'कुदो परिमाणत्तादो', इति पाठः । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'तत्तियो' इति पाठः ।

णामस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ८ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा ।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ९ ॥

एत्थ वि गुणगारो असंखेज्जा लोगा ।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ ॥ १० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा कप्पा । एवं पगदिअट्ठदा समत्ता ।

समयपबद्धट्ठदाए सव्वत्थोवा आउअस्स कम्मस्स पयडीयो ॥११॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

गोदस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ १२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ ॥ १३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्तो ।

अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ ॥ १४ ॥

को गुणगारो ? सादिरेयतिण्णिरूवाणि ।

मोहणीयस्स कम्मस्स पयडीओ संखेज्जगुणाओ ॥ १५ ॥

एत्थ गुणगारो संखेज्जा समया ।

....

नामकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ॥ ८ ॥

यहाँ गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

दर्शनावरणीयकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ॥ ९ ॥

यहाँ भी गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है ।

ज्ञानावरणीयकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं ॥ १० ॥

विशेष कितना है ? वह असंख्यात कल्प प्रमाण है । इस प्रकार प्रकृत्यर्थता समाप्त हुई ।

समयप्रबद्धार्थताकी अपेक्षा आयुकर्मकी प्रकृतियाँ सबसे स्तोक हैं ॥ ११ ॥

क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण हैं ।

गोत्रकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ॥ १२ ॥

गुणकार क्या है ? वह पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है ।

वेदनीयकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं ॥ १३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पन्द्रह कोडाकोडी सागरोपम है ।

अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं ॥ १४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार साधिक तीन अङ्क है ।

मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं ॥ १५ ॥

यहाँ गुणकार संख्यात समय है ।

णामस्स कम्मस्स पयडीयो असंखेज्जगुणाओ[1] ।। १६ ।।

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ।। १७ ।।

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ ।। १८ ।।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा कप्पा । एवं समयपबद्धट्ठदा त्ति समत्ता ।

खेत्तपच्चासए त्ति सव्वत्थोवा अंतराइयस्स कम्मस्स पयडीयो ।।१९।।

कुदो ? पंचगुणतीससागरोवमकोडाकोडिगुणिदमहामच्छुक्कस्सखेत्तपमाणत्तादो ।

मोहणीयस्स कम्मस्स पयडीयो संखेज्जगुणाओ ।। २० ।।

कुदो ? णवसयपंचाणउदिसागरोवमकोडाकोडीहि गुणिदमहामच्छुक्कस्सखेत्तमेत्त-पयडित्तादो । को गुणगारो ? सादिरेयछरूवाणि ।

आउअस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ।। २१ ।।

कुदो ? अंतोमुहुत्तगुणिदघणलोगपमाणत्तादो । को गुणगारो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो ।

....

नामकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ।। १६ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक है ।

दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ।। १७ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक हैं ।

ज्ञानावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं ।। १८ ।।

विशेष कितना है ? वह असंख्यात कल्पों प्रमाण है । इस प्रकार समयप्रबद्धार्थता समाप्त हुई ।

क्षेत्रप्रत्यासकी अपेक्षा अन्तराय कर्मकी प्रकृतियाँ सबसे स्तोक हैं ।। १९ ।।

क्योंकि, वे पाँचगुणे तीस (३० x ५) कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रके बराबर हैं ।

मोहनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं ।। २० ।।

कारण कि वे प्रकृतियाँ नौ सौ पंचानवे कोडाकोडी सागरोपमोंसे गुणित महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रके बराबर हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार साधिक छह अंक है ।

आयुकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ।। २१ ।।

क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्तसे गुणित घनलोक प्रमाण हैं । गुणकार क्या है ? वह जगप्रतरका असंख्यातवाँ भाग है ।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'संखेज्ज', ताप्रतौ '(अ) संखेज्ज' इति पाठः ।

गोदस्स कम्मस्स पयडीयो असंखेज्जगुणाओ ।। २२ ।।

को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तोवट्टिदतीससागरोवमकोडोकोडीओ ।

वेयणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ ।। २३ ।।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जलोगमेत्तो ।

णामस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ।। २४ ।।

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ असंखेज्जगुणाओ ।। २५ ।।

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पयडीओ विसेसाहियाओ ।। २६ ।।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । एवं खेत्तपच्चासो समत्तो ।

एवं वेयणाअप्पाबहुगाणुओगद्दारे समत्ते वेयणाखंडो समत्तो[१] ।

....

गोत्रकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ।। २२ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार अन्तर्मुहूर्तसे अपवर्तित तीस कोडाकोडी सागरोपम है ।

वेदनीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं ।। २३ ।।

विशेष कितना है ? वह असंख्यात लोकप्रमाण है ।

नामकर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ।। २४ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक है ।

दर्शनावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे असंख्यातगुणी हैं ।। २५ ।।

गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक है ।

ज्ञानावरणीय कर्मकी प्रकृतियाँ उनसे विशेष अधिक हैं ।। २६ ।।

विशेष कितना है ? वह प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है । इस प्रकार क्षेत्रप्रत्यास समाप्त हुआ ।

इस प्रकार वेदनाअल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके समाप्त होनेपर वेदनाखण्ड समाप्त हुआ ।

....

(१) प्रतिषु 'वेयणाखंड समत्ता', इति पाठः । ततश्च निम्नपाठः उपलभ्यते – ''णमो णाणाराहणाए, णमो दंसणाराहणाए, णमो चरित्ताराहणाए, णमो तवाराहणाए, णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, णमो भयवदो महदिमहावीरवड्ढमाणबुद्धरिसिस्स, णमो भयवदो गोदमसामिस्स, नमः, सकलविमल–केवलज्ञानावभासिने, नमो वीतरागाय महात्मने, नमो वर्द्धमानभट्टारकाय । वेदनाखण्डं समाप्तम् । अबोधे बोधं यो जनयति सदा शिष्यकुमुदे, प्रभूय प्रह्लादी दुरितपरितापोपशमनः । तपोवृत्तिर्यस्य स्फुरति जगदानन्दजननी, जिनध्यानासक्तो जगति कुलचन्द्रो मुनिरयम् । नमः सिद्धेभ्यः ।।''